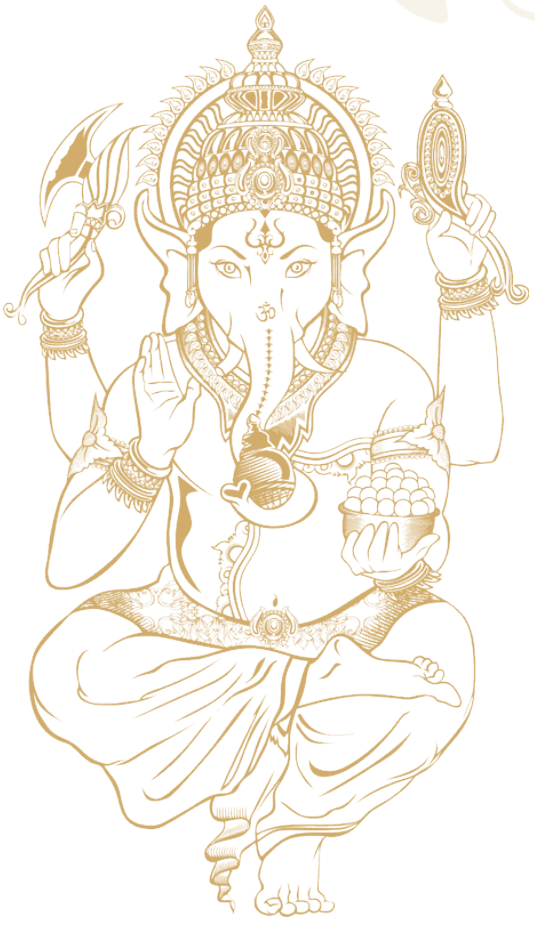

Droni

20 Mar 2026

11:39 AM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121938101**

तिथि 20/03/2026 **समय** 11:39:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:30
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	23:10:58 घं
वेलान्तर	00:07:30 घं
सूर्योदय	06:23:39 घं
सूर्यास्त	18:30:16 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	2
नक्षत्र	रेवती
योग	ब्रह्म
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो-द्रोणी
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

बुध 11वर्ष 3मा 8दि

बुध

20/03/2026
28/06/2037

	00/00/0000
	20/03/2026
शुक्र	21/09/2026
सूर्य	29/07/2027
चन्द्र	27/12/2028
मंगल	25/12/2029
राहु	13/07/2032
गुरु	19/10/2034
शनि	28/06/2037

योगिनी

उल्का 3वर्ष 11मा 22दि

उल्का

20/03/2026
12/03/2030

	20/03/2026
सिद्धा	12/05/2026
संकटा	11/09/2027
मंगला	11/11/2027
पिंगला	12/03/2028
धान्या	11/09/2028
भ्रामरी	12/05/2029
भद्रिका	12/03/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:32:00	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	---	0:00			
सूर्य			05:25:06	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	मित्र राशि	2.00	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			21:09:26	मीन	रेवती	2	बुध	शुक्र	सम राशि	1.23	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	19:40:55	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	सम राशि	1.22	मातृ	भ्रातृ	वध
बुध	व		14:16:52	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	सम राशि	1.06	पुत्र	ज्ञाति	वध
गुरु			20:59:49	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.30	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र			22:54:56	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	उच्च राशि	1.35	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि		अ	09:51:28	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.07	ज्ञाति	आयु	अतिमित्र
राहु	व		14:42:06	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		14:42:06	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

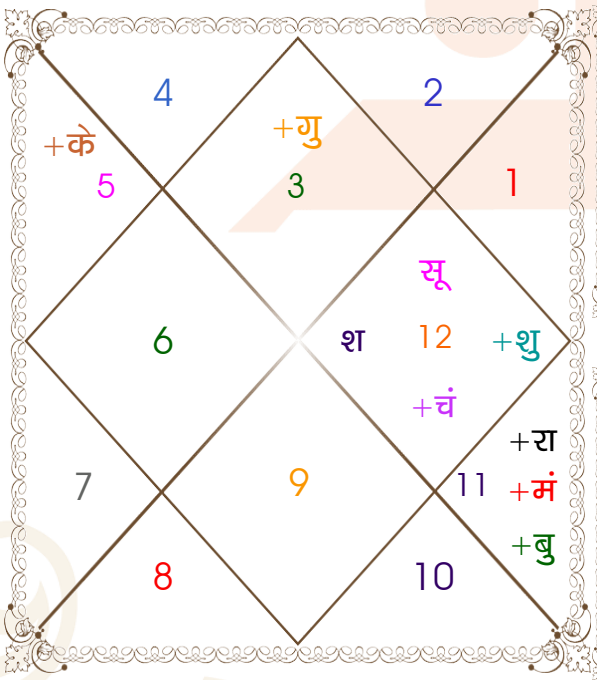

चन्द्र कुंडली

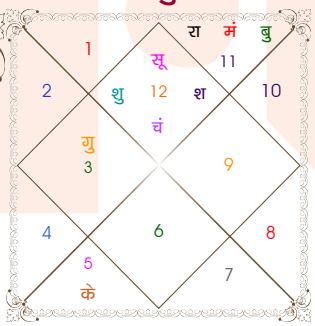

नवमांश कुंडली

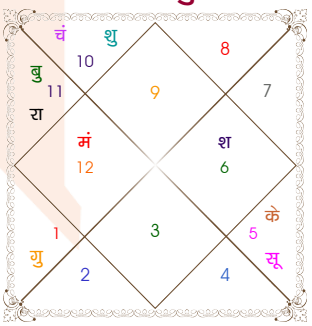

सर्वाष्टकवर्ग

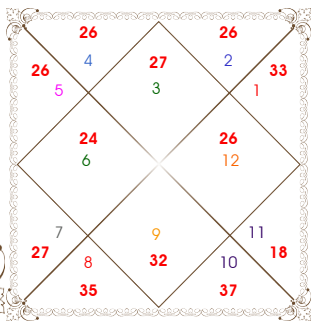

दशमांश कुंडली

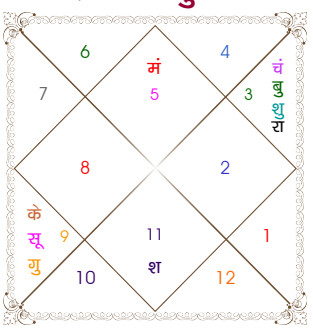

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि गज, वर्ण विप्र, गण देव, वर्ग सर्प तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दो" या "दौ" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से एक भद्र महिला होंगी तथा अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यवहार मधुर रहेगा। इससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप जीवन में कभी भी धनैश्वर्य का अभाव महसूस नहीं करेंगी एवं सर्वदा इससे सुसम्पन्न रहकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। आप एक संयमशील महिला होंगी जिससे आप अनावश्यक इच्छाओं तथा आकांक्षाओ से भी सुरक्षित रहेंगी। आप में ईमानदारी का गुण विद्यमान रहेगा तथा सभी कार्यों को ईमानदारी से ही सम्पन्न करेंगी। आप की बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं व्यापारादि में शुद्ध मन से लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही बुद्धिमता से विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति से युक्त रहकर सुखी रहेंगी।

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप सम्पूर्ण सुन्दर शरीर अंगों से युक्त होंगी एवं इससे आपके सौन्दर्य में विशेष आकर्षण रहेगा। आप समाज के सभी वर्गो में लोक प्रिय रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा आदर भी अर्जित करेंगी। साथ ही उनको आप हर प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए भी उद्य त रहेंगी। आप में शौर्य गुण भी रहेंगे तथा नित्य साहसिक एवं पराक्रम संबंधी कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आप हृदय से शुद्ध रहेंगी एवं अन्य जनों से आपका व्यवहार स्नेह एवं सम्मान से युक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त एक धनाढ्य महिला के रूप में भी समाज में आपकी ख्याति रहेगी।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आप विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने में दक्ष होगी तथा अपने सभी महत्वपूर्ण कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी। आप एक विदुषी भी होंगी एवं विभिन्न प्रकार के शास्त्रादि का परिश्रमपूर्वक ज्ञानार्जन करती रहेंगी। इससे समाज में

आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी साथ ही वैभव आदि से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपके जानु भाग में कोई चिन्ह या निशान भी हो सकता हैं। आप सलाह आदि के कार्यों में प्रवीण रहेगी तथा समाज में मान सम्मान प्राप्त करेंगी। साथ ही आप सुन्दर एवं गुणवान पति तथा पुत्रों से भी युक्त रहेंगी। आपकी मित्रता भी गुणवान तथा शिक्षित लोगों से रहेगी। आप दृढ निश्चय से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगी एवं स्थिर लक्ष्मी से युक्त रहकर प्रसन्नता पूर्वक सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आप ताम्र पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप राज्य या सरकार से नित्य धनलाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। साथ ही आप सन्तोषी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा। अतः सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। जीवन में विविध प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। माता पिता के प्रति आप पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी तथा उनसे भी आपको पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त होगी ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विदुषी के रूप में आपका सम्मान होता रहेगा। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगी तथा वाहन एवं भूमि आदि जायदाद से भी सुसम्पन्न रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा स्वभाव में साहस का समावेश रहेगा। आप परोपकार संबंधी कार्यों में भी में तत्पर रहेंगी तथा सज्जन पुरूषों का नित्य आदर करेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का व्यक्तित्व तथा सौन्दर्य आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका मस्तक विशाल एवं नासिका ऊंची रहेगी। साथ ही आखें देखने में सुन्दर तथा चित्ताकर्षक रहेंगी। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर सुडौल तथा पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी शिल्प विद्या या चित्रकारी के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इस क्षेत्र में सफलता तथा यशार्जन कर

सकेगी। शत्रु वर्ग को परास्त करने में आप सफल होंगी तथा वे भी आपसे भयभीत रहेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसका ज्ञान प्राप्त करने को भी उत्सुक रहेंगी। विविध प्रकार के शास्त्रों आदि का ज्ञानार्जन करके आप एक विदुषी महिला के रूप में समाज में पूर्ण आदरणीय तथा प्रतिष्ठित रहेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा इसके अनुपालन में भी आप यत्नशील रहेंगी। पुरूष वर्ग में आप अत्यन्त ही प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगी। आपकी वाणी मधुर एवं प्रिय होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। जीवन में आप आवश्यक भौतिक सुखों की प्राप्ति करके प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगी। आप में क्रोध की न्यूनता रहेगी एवं सरकारी सेवा में भी नियुक्त हो सकेंगी। जमीन के अन्दर या खान से उत्पन्न द्रव्यों से आप विशिष्ट लाभार्जन करेंगी। आपके पति हमेशा आपके वश में रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को आपके अनुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील स्वभाव की महिला होंगी एवं सभी लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करके आप अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी एवं इसके लिए नित्य रूचिशील रहेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता का भाव भी आप में रहेगा तथा जीवन में यत्नपूर्वक यथा शक्ति आप इसका अनुपालन करती रहेंगी।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जलोत्पन्न द्रव्यों तथा मोती आदि रत्नों से सुशोभित रहेंगी एवं व्यापार आदि में इनसे इच्छित लाभ प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति की धन सम्पति भी प्राप्त कर सकेंगी तथा जीवन में सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आप सुन्दर तथा नवीन आकर्षक परिधानों के प्रति अत्यन्त ही रूचि शील रहेंगी एवं प्रयत्नपूर्वक इनकी प्राप्ति के लिए सर्वथा उद्यत एवं उत्सुक रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की इच्छा की आप में प्रवलता रहेगी तथा दिन में कई बार इसका उपयोग करेंगी। आपका अपने पति के ऊपर पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रहेगा एवं उनके आप पूर्ण रूपेण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी। फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप में विदुषी के सभी गुण विद्यमान रहेंगे। साथ ही कृतज्ञता की भावना भी आप में रहेगी एवं अन्य

व्यक्तियों के उपकृत होने पर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करेंगी। साथ ही आप भाग्यशाली महिला रहेंगी एवं आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप अपने जीवन में संयम का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगी तथा सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी। आप चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगी तथा एक बुद्धिमान तथा चतुर महिला के रूप में सम्मान तथा ख्याति अर्जित करेंगी। जल में क्रीड़ा करना आपको अत्यन्त ही रूचिकर लगेगा तथा इसके लिए आप नित्य यत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार के धोखे आदि का सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही शस्त्र चलाने में भी आपकी रूचि रहेगी तथा यदा कदा जीवन में शारीरिक कमजोरी की भी अनुभूति करेंगी।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप आजीविकार्जन के कार्यों में ही सर्वदा व्यस्त रहेंगी एवं कभी कभी आपके आय स्रेतों में भी व्यवधान उत्पन्न होगा। फलतः आपको आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा। आपका शरीर कान्ति युक्त रहेगा तथा इससे आपके सौन्दर्याकर्षण में नित्य वृद्धि होती रहेगी। पिता से भी आप धन सम्पत्ति प्राप्त करेंगी एवं जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगी। साथ ही आप स्वभाव से ही साहसी होंगी तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप स्वभाव से सन्तोषी होंगी तथा जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी में सन्तुष्ट रहेंगी।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी कोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से गम्भीर रहेंगी तथा शौर्योचित कार्यों को करने में सर्वथा रूचिशील रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा सम्माननीय रहेंगी एवं लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे लेकिन आप कंजूस प्रवृति से भी युक्त रहेंगी तथा धन संचय के प्रति विशेष रूचिशील रहेंगी। परिवार या कुल में आप सर्वप्रिय रहेंगी। इसके साथ ही सेवाकार्यों को करने में भी आप तत्पर रहेंगी तथा इससे आपको आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। आप की गमन गति तीव्र रहेगी

तथा धीरे धीरे चलना आपको अरूचिकर लगेगा। आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा तथा अन्य लोगों के लिए यह अनुकरणनीय रहेगा। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय एवं स्नेहशील रहेंगी।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप अपने आकर्षक व्यक्तित्व तथा विद्धता से समाज के सभी लोगों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा कई अन्य लोगों से भी आपके मधुर तथा मित्रता पूर्ण संबंध रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी प्रिय तथा मधुर होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा सब कुछ सरलता से ग्रहण करने की प्रतिभा से आप सम्पन्न रहेंगी। आप को अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना प्रियकर लगेगा। अन्य जनों के गुणों की आप ज्ञाता रहेंगी तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में सर्वथा सफल रहेंगी। इसके साथ ही आप स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित उत्तमगुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप अतुल धन सम्पति की भी स्वामिनी होगी तथा जीवन में सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेंगी तथा दान शीलता की प्रवृति से आप सुशोभित रहेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा सभी लोग आपकी बुद्धिमता से प्रभावित रहेंगे। साथ ही आप सादगी पसन्द भी रहेंगी एवं अनावश्यक दिखावे की प्रयत्नपूर्वक उपेक्षा ही करेंगी। इसके साथ ही आप एक महान विदुषी होगी तथा समाज में पूर्ण प्रतिष्ठित जीवन यापन करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गजयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप उच्चाधिकारियों के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी एवं इनसे आपके मित्रता पूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे फलतः आपके महत्वपूर्ण कार्य

सुगमता पूर्वक होते रहेंगे। आप एक बलशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वबल से ही सम्पन्न करेंगी। आप कई प्रकार के सुखसंसाधनों से भी युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप किसी उच्चाधिकारी की सहयोगी या स्वयं भी एक उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित कर सकती हैं। आप एक उत्साही महिला होंगी तथा अपने सभी कार्यों को पूणोत्साह की भावना से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते

रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ताएं, शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र पीत चन्दन, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा समस्त अशुभ प्रभाव दूर होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी एवं लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा मन को शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।